शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
78 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चित्रण

प्रेटी पुष्कर
अनुसंधान विद्वान, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश
ई–मेल prettypushkar10@gmail.com

सारांश

उपन्यास आधुनिक जीवन का गत्यात्मक महाकाव्य है जिसमें जीवन की जटिलताओं समस्याओं संवेदनाओं और अंतर्विरोधों का रेखांकन सामाजिक गतिविधियों संरचनाओं और अवध ाारणाओं के अनुरूप होता जा रहा है। अतः इस साहित्यिक विधा में सामाजिक जीवन के एक समानांतरता दिखाई पड़ती है। यह मानवीयता को स्वीकार कर मनुश्य जीवन की ऊपरी और अतल गहराइयों का स्पर्ष कर किंतु उससे विभन्न रूप धारण कर महत्वपूर्ण बन जाता है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने उपन्यास को परिभाषित करते हुए कहा था मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। महिला लेखन समय की जरूरत है जो महिलाओं द्वारा महिलाओं को दृष्टि में रखकर समाज में उनके लिए परिभाषित मूल्यांकन एवं प्रतिमानों को परखता है और गलत प्रतिमानो को खारिज कर नए मूल्यों की सृष्टि की ओर उन्मुख होता है। कभी–कभी लेकिन लेखिकाओं को सामाजिक चुनौतियेां का सामना करना पड़ता है। कभी वह व्यंग का पात्र बन जाते हैं कभी उनके साहित्य का मूल्यांकन सही मायनों में नहीं हो पाता। आधुनिक काल में लेखिकाओं के ऊपर नारीवाद और नारीवादी विचारधाराओं का बहुत ही ज्यादा प्रभाव पड़ा है। पितृसत्तात्मक समाज के अंतर्गत स्त्रियेां के व्यक्त्वि का विकास होता है बल्कि उनका व्यक्त्वि विकृत होता चला जाता है । पढ़ी–लिखी आधुनिक सोच वाली महिलाएं अपने व्यक्त्वि के लिए आशामय हैं और वह अपने व्यक्तित्व की स्थापना की कोशिश भी करती हैं यह महिलाएं साहित्य में अपने एक अलग दृष्टिकोण की स्थापना करती हैं और साहित्य में स्त्री को एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

मुख्य शब्द– *उपन्यास महिलाओं लेखिकाओं मानसिक।*

प्रस्तावना :

भारत 1947 में ब्रिटिश शासन से आजाद हो गया था एवं इसके उपरांत एक स्वतंत्र संविधान तैयार किया, जिसे 26 जनवरी, 1950 को पूरे भारत वर्ष में लागू किया गया। भारतीय संविधान अपने आप में एक अनोखा संविधान है तथा इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता पुरूष और महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करना

है। इसके अतिरिक्त महिलाओं के उद्धार के लिए कदम भी उठाए गए हैं। प्रत्येक भारतीय नागरिक को भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। पर अभी भी महिलाओं की अभिवृद्धि आवश्यक है।

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्य में कई विधायें शामिल हैं जिसमें उपन्यास एक ऐसी विधा है जिसने मानव जीवन और मानव समाज के वास्तविक रूप को प्रस्तुत किया है और महिलाओं की स्थिति को सुचारू पूर्वक दर्शाया गया है। जिसमें महिला लेखिकाओं योगदान सर्वोपरि है स्वतंत्रता के बाद महिला लेखन नारी जीवन के विधिक पक्षों को अपनी आधुनिकता से प्रस्तुत करने का प्रयास करने लगी।

लेखिका ने नारी संबंधी अपने सुलझे हुए दृष्टिकोण से उपस्थित कर नारी चिंतन को नई दिशा निर्देश देने में सक्षम बन पाए हैं। उनकी रचनाएं साहित्य को एक नई भाषा, नया पाठ एवं नई दृष्टि देती है। महिला उपन्यासकारों की रचनाओं से स्त्री के विभिन्न पक्षों त्रास, पीड़ा, अकेलेपन, और अन्य समस्याएं पाठकों के सामने प्रस्तुत होने लगी भारतीय समाज में नारी के प्रति दोहरे मापदंड जो प्राचीन काल में भी विद्यमान था, वह आज भी बरकरार है हर जमाने में नारी के उजले रूप और मानसिकता को परंपरा से चले आ रहे सत्ता केन्द्रित पुरूष प्रधान समाज में स्त्री समाज द्वारा बनाये गए नियम का उल्लंघन करने में असमर्थ बनी रही है।

वर्तमान समय में घर और बाहर के जीवन में संतुलन स्थापित करने में महिलाओं का संपूर्ण जीवन बीत जाता है परंपरागत मान्यताओं, अवधारणों और कायदे कानूनों के अन्तर्गत दम घुटती नारी की मुक्ति के तीव्र आग्रह के बारे में लेखिका ने अपने सशक्त भाषा प्रयोग से किया है। अपनी महिला पात्रों के जरिए भी स्त्री की स्वतंत्रता और अधिकार की भावना को प्रस्तुत कर देती हैं। स्त्री वर्ग चेतना उनकी अभिव्यक्ति नारी दृष्टि के अनुसार करती हैं और परंपरागत सत्तात्मक सामाजिक संरचना के अंतर्गत विद्यमान नारी संबंधी नारी स्वतंत्रता के भाव बोध को सार्थक और नई भाशा में प्रस्तुत करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री चित्रण :

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 को अलीगढ़ जिले में हुआ ब्राहमण कुल में जन्मी पली मैत्रयी भिन्न–भिन्न वर्ग समुदायों के पारिवारिक आश्रय में बड़ी हुई इनका आरंभिक जीवन झांसी में व्यतीत हुआ। निडर व्यक्तित्व की धनी मैत्रेयी पुष्पा अपनी बात को स्पष्टता पूर्वक कहती थी । अपनी स्पष्टवादी प्रवृत्ति के कारण ही उन समस्त लेखकों को स्पष्ट रूप से यह बताती हैं कि कल्पना का आश्रय लेकर रचना लिखने वाले क्या जाने की यथार्थ की तहों में छुपा यथार्थ क्या है। मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व पारदर्शी होने के नाते उनमें अद्भुत साहस आत्मबल और दृढता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह गुण उनकी नायिकाओं में भी भरपूर दिखाई पड़ता है।

मैत्रेयी पुष्पा यह नाम सुनते ही एक सशक्त नारी का चित्र हमारे सामने आता है । चाक की नायिका सारंग की तरह एक सशक्त नारी मैत्रेयी जी ने जो कुछ अपने जीवन में देखा और अनुभव किया उसको ही वे अपने उपन्यासों को कहानी का रूप से देती हैं। इसी कारण उनके उपन्यास पाठकों को प्रभावित करते हैं।

मैत्रेयी पुष्पाजी ने 1990 से अपना लेखन प्रारंभ किया। उन्होंने अपने जीवन के खट्टे मीठे अनुभवों को उम्र के इस पड़ाव में आकर लेखन की कला से बताया है । वह बहुत ही सीधा और सरल जीवन व्यतीत करती थी और उन्हें इसी प्रवृत्ति के लोग बेहद पसंद थे उनको गांव का वातावरण अपनी ओर आकर्षित करता थी। उनके साहित्य में एक तरह से स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक के परिवेश का समाविष्ट है। पुरूष प्रधान समाज में वह स्त्री के अच्छे और बुरे अनुभवों को अपने लेखन की कला से प्रस्तुत करती हूं। उनके लेखन में एक अलग ही बात है जो असल जिंदगी के अनुभवों को दर्शाती हैं उनके पात्र को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है जैसा कि हम उन पात्रों में उतर चुके हैं मैत्रेयी जी के लेखन में इतनी गहराई होती है की वह अपने उपन्यासों को समाज का आईना बना देती हैं। आज के समय में मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसी लेखिका प्रमाणित हुई है जिन्होंने अपने लेखन में इमानदारी और सत्यता का परिचय दिया है। उनकी रचनाएं इदन्नम, झूला नट, अल्मा कबूतरी, स्त्री विषयक संवेदनाओं के विविध आयामों से भरपूर हैं। उन्होंने अपनी कथा के स्त्री पात्रों को ग्रामीण वातावरण में ढूंढा, उनके सुख दुख और उनके जीवन के संघर्ष को सुना समझा और अपने शब्दों के जरिए से अपने लेखन में उतारा।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी

नारी पर अत्याचार

प्राचीन समय से ही स्त्री एक भोग्य वस्तु रही है। पुरूष प्रधान समाज में भी वह अपने सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के साथ जीना चाहती हैं परंतु कुछ पूंजीवादी और सामंतवादी लोग उसके दैहिक सौंदर्य को देख कर उसका शोषण करते हैं सामंतवादी और जमीदार लोग मेहनत मजदूरी करने वाली स्त्रियों को शोषण का शिकार बनाते हैं। मैत्रेयी जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री के शारीरिक मानसिक आर्थिक और नैतिक अत्याचार का वर्णन किया है। उपन्यास इदन्नम में उसकी महिला पात्र अलिया इस शोषण का साक्षात उदाहरण है। पंद्रह वर्षीया आलिया अपने केशर मालिकों के पास गिरबी है। मात्र 15 वर्ष की आयु में एक किशोरी के शारीरिक शोषण की यह बहुत ही मर्मस्पर्शी कहानी है। आर्थिक रूप से पीड़ित स्त्री अपने परिवार की उत्तरदायित्व को निभाने के लिए हर प्रकार से खुद को समर्पित कर देती है और यह पुरूष प्रधान समाज उन स्त्रियों का फायदा उठाने में तनिक भी संकोच नहीं करते ।

इस उपन्यास में अभिलाख सिंह जगेशवर की बेटी सुगना से जबरदस्ती करने की कोशिश करता हूँ। अभिलाख का लीला के साथ और गणेशी का तुलसिन के साथ अनैतिक संबंध का चित्रण भी इस उपन्यास में किया गया है।

मैत्रेयी जी के दूसरे उपन्यास कस्तूरी कुंडल बसेरा में कस्तूरी अपनी बेटी मैत्रेयी को शहर के कॉलेज में पढ़ने भेजती हैं और वहां के प्रिंसिपल जो कि मैत्रेयी से बहुत बड़े हैं उसका शारीरिक शोषण करते हैं लड़की के साथ हुए, अत्याचार के बावजूद समाज में उस लड़की पर ही दोष लगाया जिस लड़की का शोषण हुआ।

विवाह के बाद नारी

आज के आधुनिक समय में अभी भी कई परिवार ऐसे हैं जो विवाह में कन्या की सहमति

को प्रथमिकता नहीं देते। उनके अनुसार माता पिता द्वारा पसंद किए गए पुरूष से ही उस कन्या को विवाह करना ही पड़ता है चाहे वह उसके लिए सही हो अथवा ना हो। माता पिता के लिए कन्या का विवाह करना ही प्राथमिकता है।

मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास बेतवा बहती रही में नारी पात्र उर्बशी राजगीर के माहन सिंह की बेटी है । एक दुर्घटना में उसके पति की मृत्यु हो जाती है और उसका भविष्य अंधकार में चला जाता है वह अपने पुत्र का लालन–पालन दाऊ के स्नेह संरक्षण में करती है पर उसके भाई अजीत की कुटिलता उसे चैन नहीं लेने देती है उर्बशी का भाई उसका बिवाह 3 बच्चों के पिता बरजोर सिंह के साथ करवा देता है । विवाह के बाद उर्बशी के जीवन में कुछ भी नहीं रह जाता है।

एक अन्य उपन्यास कस्तूरी कुंडल बसेरा की कस्तूरी की अवस्था इसी स्थिति से मिलती–जुलती है। उसका भाई अपने कर्ज को चुकाने के लिए खेत गिरवी रखकर जमीदार से पैसा वसूल करता है और उस पैसे को दिलवाने के लिए बहन से कहा जाता है। मां और भाई उसका विवाह उसकी मर्जी के बगैर बूढ़े और बीमार जमीदार के साथ कराने का निर्णय ले लेते हैं। बेटी को विवश होकर विवाह के लिए तैयार होना पड़ता है उसकी मां केवल अपने पुत्र के बारे में ही सोचती है पुत्री के बारे में वह कुछ भी नहीं सोचती।

विवाह एक पवित्र बंधन भारतीय समाज में माना गया है लेकिन कुछ लोग अपने स्वार्थ और दुष्ट मनोंवृत्ति के कारण इस पवित्र बंधन को समस्याओं में बांध देते हैं और इसका शिकार स्त्रियां होती हैं।

समाज में तलाकशुदा नारी की स्थिति

पति और पत्नी एक गाड़ी के दो पहिए के समान होते हैं दोनों एक परिवार की आधारशिला होते हैं। प्राचीन समय से ही पत्नी पति को परमेश्वर मानती रही है परंतु धीरे–धीरे पति पत्नी के संबंधों में विश्वास, प्रेम और समर्पण की भावना कम होती जा रही है। स्त्री को परिवार में हमेशा से दूसरा स्थान ही प्राप्त है। पहले स्थान पर प्राचीन समय से ही पुरूष का वास रहा है।

बेतवा बहती रही उपन्यास में गजरा का पति उसे इसलिए त्याग देता है क्योंकि वह कद में बहुत छोटी और सांवले रंग की होती है परंतु गजरा पति की उपेक्षा को सहन करती हुई ससुराल में एक कोने में सिमटी बैठ कर के ही अपने आप को धन्य समझती है क्योंकि उसे अपने माता–पिता की कही हुई बात कि बेटी के लिए ससुराल ही सब कुछ होता है । याद थी परंतु उसके पति ने एक बार भी यह नहीं सोचा कि वह उसकी मानसिक और नैतिक स्थिति को ठेस पहुंचा रहा है।

कुसमा भाभी एक ऐसा नारी पात्र हैं जो कि यशपाल की तलाकशुदा पत्नी है वह निःसंतान है जिसके कारण यशपाल उन्हें त्याग देता है और एक धनी घर की लड़की से विवाह कर लेता है।

उपन्यास चाक की पात्र अपने पति द्वारा त्याग दी जाती है और वह अपने आगे के जीवन

को मायके में जाकर के बिताने लगती है परंतु एक दिन उसे उसके पति की मृत्यु की खबर मिलती है वह खुद को रोक नहीं पाती और वह उसके अंतिम दर्शन के लिए आती है।

आज के आधुनिक युग में पति–पत्नी के संबंधों में लगातार आने वाली मूल्यहीनता पति के स्वार्थ, लाभ और इच्छाओं की वजह से पत्नी बराबर शोषण का शिकार होती है। पत्नी के रूप में नारियों का चित्रण मैत्रेयी जी के उपन्यासों में मर्मस्पर्शी तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

मैत्रेयी जी के उपन्यासों में दलित नारी का चित्रण

भारतीय समाज में दलित नारी को दोहरा शोषण सहना पड़ता है। समाज में पहला शोषण नारी के रूप में जो कि पुरूष प्रधान समाज में होता है और दूसरा शोषण दलित नारी के रूप में जोकि उसी की जाति के पुरूष के द्वारा होता है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उपन्यासों में दलित नारी का चित्रण किया है और उसके दोहरे अभिशाप की सच्चाई को व्यक्ति किया है।

दलित स्त्री मजदूरी और खेतों में काम करती है। अपने परिवार की जरूरतों के लिए मेहनत करती हैं। उसके साथ–साथ अपने घर का भी ध्यान रखती हैं। इदन्नम उपन्यास में दलित स्त्री का चित्रण और राउत आदिवासियों की दुर्दशा को दर्शाया गया है जिसमें इदन्नम की मंदा जब अवधा से पूछती है कि शहर में इतने कष्ट झेलने की बजाय तुम अपने गांव क्यों नहीं लौट जाती। बड़े ही मार्मिक वाणी में अवधा बताती है कि किस तरह ठेकेदार कम पैसों में ज्यादा मजदूरी कराता है।

इस प्रकार कई तरीकों से दलित स्त्री का शोषण होता रहा है। मैत्रेयी जी के उपन्यासों में दलित चित्रण इतना सजग रूप से किया गया है कि वास्तविकता का एहसास होता है। दलित नारी के जीवन में आने वाली कठिनाइयों का मर्मस्पर्शी वर्णन है।

मूल्यांकन

हिंदी साहित्य का मुख्य भाग उपन्यास है। उपन्यासों में उपन्यासकार जिंदगी से रूबरू कराने का प्रयास करता है वह अपने उपन्यासों में सच्चाई ईमानदारी और विभिन्न रंगों के पात्र को बनाता है इसी प्रकार मैत्रेई पुष्पा जी ने भी अपने पात्रों में खासकर महिला पात्रों में अपने अनुभव के द्वारा मध्यम वर्ग की महिलाओं पीड़ित महिलाओं और उनकी समस्याओं उनकी गहराई उनकी संवेदना समझ के साथ रचना की है।

मैत्रेयी जी की जो बात बहुत आकर्षित है वह उनके गांव का सहज स्वाभाविक कथानक जिसे दृष्टि और सवार की जरूरत थी और उसी पर उन्होंने जोर दिया इनकी नारी अपने भाग्य को कोसने और रोने वाली ना होकर बल्कि जिंदगी की विषमताओं और संघर्षो से बनी है। उनके उपन्यासों में इदन्नम, अल्मा कबूतरी, चाक, आंगनपाखी, विजन, झूलनट आदि सर्वोत्कृष्टि उपन्यास हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी ने भारतीय उपन्यास साहित्य में अपने उपन्यास लेखन के द्वारा सजीवता के साथ उपन्यासों में महत्वपूर्ण येागदान दिया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 पुष्पा मैत्रेयी (1994) *बेतवा बहती रही,* किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।

2 पुष्पा मैत्रेयी (1994) *इदन्नम*, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
3 पुष्पा मैत्रेयी (1997) *चाक*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4 पुष्पा मैत्रेयी (1999) *झूला नट*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।